# भारत में राष्ट्रवाद–

राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान भारत में घटी कुछ प्रमुख घटनाएं–

1– **जालियांवाला हत्याकांड**–बिट्रिश शासन की भारतीयों के प्रति अत्याचार पूर्ण नीतियों के चलते एंव रौलेट एक्ट के विरूद्व भारतीय राष्ट्रीय कॉग्रेस द्वारा पंजाब के अमृतसर जिले के **जलियांवाला बाग** नामक स्थान पर एक शान्पिूर्ण विरोध प्रदर्शन हेतु एक सभा का आयोजन किया गया । सभा में लगभग 2,0000 स्त्री–पुरूष एकत्र हुए ,सभा बड़ी शान्तिपूर्ण डंग से चल रही थी कि अचानक जनरल डायर ने आकर सारे बाग को अपने सैनिकों से घिरवा दिया और निहत्थी जनता पर गोली चलाने का आदेश दे दिया ,सरकारी गणना के अनुसार इस हत्याकांड में सैकड़ो व्यक्ति मारे गये,इस घटना के कारण सम्पूर्ण देश में अंगेजी शासन के विरूद्व जनता का सघर्ष और गति पकड़ने लगा।

2–**रौलेट एक्ट**– भारतीय स्वत्रन्त्रता आन्दोलन का दमन करने के उददेश्य से बिट्रिश सरकार द्वारा न्यायाधीश **सिडनी रौलेट की अध्यक्षता** में एक समिति नियुक्त की जिसकी सिफारिश के आधार पर **21 मार्च 1919** को रौलेट एक्ट लागू किया गया । इस एक्ट के अनुसार किसी भी व्यक्ति को मात्र सन्देह के आधार पर ही गिरफतार किया जा सकता था अथवा गुप्त मुकदमा चलाकर उसे दण्डित किया जा सकता था । भारतीयों ने **काला कानून** कहकर इस एक्ट का विरोध किया ।देश भर में महात्मा गॉधी के नेत्त्व में विरोध प्रदर्शन किये गये ।

गोबिन्द बल्लभ भटट
स0अ0,एल0टी0
रा0इ0का0 झूलाघाट।



गोबिन्द बल्लभ भटट
स0अ0 एल0टी0
रा0इ0का0झूलाघाट ,पिथौरागढ।

# भारत में राष्ट्रवाद–

3–**साइमन कमीशन**–भारत में बिट्रिश शासन की नीतियों के विरोध में साधारण जनता ,मजदूर, किसान युवा आन्दोलित थे । जगह–जगह विरोध प्रदर्शन हो रहे थे ,क्रान्तिकारी आन्दोलन भी गति पकड़ रहा था ,इन सब को देखते हुए बिट्रेन की टोरी सरकार द्वारा सर जान साइमन के नेतृत्व में एक आयोग का गठन किया , इस आयोग को भारत में संवैधानिक व्यवस्था की कार्यशैली का अध्ययन करना था और सुझाव देने थे ,इस आयोग में एक भी भारतीय सदस्य नहीं था। सारे सदस्य अंगेज थे जिसका भारतीय राष्ट्रीय कॉग्रेस द्वारा विरोध किया गया ।1928 में जब साइमन कमीशन भारत आया तो उसका स्वागत **साइमन कमीशन गो बैक** के नारों से किया गया ।

4– **चौरी–चौरा की घटना**–महात्मा गॉधी के नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रीय कॉग्रेस द्वारा बिट्रिश शासन की नीतियों के विरूद्व अहिंसात्मक असहयोग आन्दोलन चलाया जा रहा था इसी दौरान 4 फरवरी 1922 को उत्तर–प्रदेश के निकट गोरखपुर में आन्दोलनकारियों ने एक पुलिस थाने को आग के हवाले कर दिया जिसमें 22 पुलिसकर्मी जिन्दा जलकर मर गये थे ,जिस कारण गॉधी जी ने आन्दोलन में हिंसा होने के कारण असहयोग आन्दोलन को वापस ले लिया ।

गोबिन्द बल्लभ भटट
स0अ0,एल0टी0
रा0इ0का0 झूलाघाट।
गोबिन्द बल्लभ भटट
स0अ0 एल0टी0
रा0इ0का0झूलाघाट ,पिथौरागढ।

# भारत में राष्ट्रवाद–

5–**असहयोग आन्दोलन**–1920 में भारतीय राष्ट्रीय कॉग्रेस द्वारा देश भर में असहयोग आन्दोलन चलाया गया ।अपनी प्रसिद्व पुस्तक **हिन्द स्वराज्य में महात्मा गॉधी** ने कहा था कि भारत में बिट्रिश शासन भारतीयों के सहयोग से स्थापित हुआ था और यह शासन इसी सहयोग के कारण चल पा रहा है। अगर भारत के लोग अपना सहयोग वापस ले लें तो साल भर के भीतर बिट्रिश शासन ढह जायेगा और स्वराज की स्थापना हो जायेगी।

## असहयोग आन्दोलन के कारण–

1– रौलेट एक्ट –1919 में बिट्रिश सरकार द्वारा न्यायाधीश सिडनी रौलेट की समिति कही सिफारिसों के आधार पर रौलेट एक्ट लागू किया गया । इस एक्ट के अनुसार किसी भी व्यक्ति को मात्र सन्देह के आधार पर ही गिरफतार किया जा सकता था अथवा गुप्त मुकदमा चलाकर उसे दण्डित किया जा सकता था । भारतीयों ने काला कानून कहकर इस एक्ट का विरोध किया ।

2– जलियांवाला बाग नरसंहार–जलियांवाला बाग नरसंहार के कारण देश भर में बिट्रिश शासन के विरूद्व असन्तोष व्याप्त था।

3– पंजाग में मार्शल ला लागू किया जाना–जलियावांला बाग नरसंहार के दोषियों को दण्डित करने के स्थान पर सरकार द्वारा पंजाब में मार्शल ला लागू किया गया जिससे असहयोग आन्दोलन की पृष्ठभूमि तैयार हुई।

4–हण्टर कमेटी की जांच – हंटर कमेटी द्वारा प्रस्तुत जांच रिर्पोट से असन्तोष और ब्याप्त हो गया।

5– टर्की में खिलाफत के प्रश्न को लेकर देश के मुसलवान भी अंगेजों के विरूद्व थे महात्मागॉधी ने अली बन्धुओं के सामने असहयोग आन्दोलन कार्यक्रम रखा तो उन्होंने भी असहयोग आन्दोलन को समर्थन दे दिया।

## असहयोग आन्दोलन के कार्यक्रम–

1– विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करना तथा स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग करना ।

2– सरकार द्वारा दी गयी पदवियों को वापस करना तथा अवैतनिक पदों का त्यागकरना।

3–सरकारी नौकरियें ,सेना,पुलिस,अदालतों विधायी परिषदों ,स्कूलों और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करना।

4– अगर सरकार दमन का राष्ता अपनाती है तो ब्यापक सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरू करना।

5–अपनी स्वदेशी शिक्षण संस्थाएं खोलना।

गोबिन्द बल्लभ भटट
स0अ0,एल0टी0
रा0इ0का0 झूलाघाट।



गोबिन्द बल्लभ भटट
स0अ0 एल0टी0
रा0इ0का0झूलाघाट ,पिथौरागढ।

## भारत में राष्ट्रवाद–

**असहयोग आन्दोलन को वापस लेना**– असहयोग आन्दोलन के दौरान 4 फरवरी 1922 को उत्तर–प्रदेश के निकट गोरखपुर में आन्दोलनकारियों ने एक पुलिस थाने को आग के हवाले कर दिया जिसमें 22 पुलिसकर्मी जिन्दा जलकर मर गये थे ,जिस कारण गॉधी जी ने आन्दोलन में हिंसा होने के कारण असहयोग आन्दोलन को वापस ले लिया ।

गोबिन्द बल्लभ भटट
स0अ0,एल0टी0
रा0इ0का0 झूलाघाट।



गोबिन्द बल्लभ भटट
स0अ0 एल0टी0
रा0इ0का0झूलाघाट ,पिथौरागढ।

# भारत में राष्ट्रवाद–

6– **सविनय अवज्ञा आन्दोलन–** 1927 इ0 में साइमन कमीशन की नियुक्ति और उसके प्रतिवेदन ने देश भर में असन्तोष की लहर दौड़ा दी और सविनय अवज्ञा आन्दोलन की पृष्ठभूमि तैयार हो गयी ।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन को प्ररम्भ करने के कारण–

1– साइमन कमीशन जब 1928 में भारत आया तो उसमें एक भी भारतीय का नाम न होने के कारण उसका देश भर में विरोध किया गया,

2–आर्थिक मन्दी के कारण असन्तोष–विश्वब्यापी आर्थिक मन्दी का असर भारत पर भी पड़ा 1926 के बाद कृषि उत्पादों की कीमतें गिरने लगी और 1930 के बाद आर्थव्यवस्थाा पूरी तरह धरासायी हो गयी जिससे भारतीय सरकार से असन्तुष्ट हो गये।

3–नेहरू रिर्पोट की अस्वीकृति– बिट्रिश शासन द्वारा नेहरू रिर्पोट को अस्वीकार कर दिया जिससे भारत में संवैधानिक तथा उत्तरदायी शासन की मॉग समाप्त होती सी दिखायी देने लगी।

4– स्वतन्त्रता की मॉग की अस्वीकृति– 1929 के जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में क्रांगेस के लाहौर अधिवेशन में पूर्ण स्वराज्य की मॉग की गयी लेकिन सरकार ने इसे ठुकरा दिया था।

ऐसे में महात्मा गॉधी के पास दूसरा राष्ता नहीं था इस तरह क्रांगेस ने देश भर में बिट्रिश शासन के विरूद्व सविनय अवज्ञा आन्दोलन छेड़ दिया , गॉधी जी ने नमक आन्दोलन के जरिये अंगेजी सरकार के कानूनों का विरोध किया,जगह –जगह सरकार का क्रागेस के कार्यकर्त्ताओं द्वारा विनय पूर्वक अंग्रेजी सरकार का विरोध किया 1930 से लेकर 1934 तक यह आन्दोलन चला कालान्तर में यह उग्र हो गया जिस कारण महात्मा गॉधी ने यह आन्दोलन ले लिया।

**सविनय अवज्ञा आन्दोलन के परिणाम**–सविनय अवज्ञा आन्दोलन के निम्नलिखित परिणाम आये–

1–इस आन्दोलन के जरिये भारतीयों में राष्ट्रीय भावना का जागरण किया।

2–इस आन्दोलन से ही बिट्रिश सरकार का ध्यान भारत में संवैधानिक सुधारों की ओर गया।

3–सविनय अवज्ञा आन्दोलन ने ही भारत में 1935 के भारत शासन अधिनियम की नींव डाली।

4–इस आन्दोलन के प्रभाव से घबराकर बिट्रिश सरकार द्वारा भारत में साम्प्रदायिकता को बढाने का कार्य किया।

गोबिन्द बल्लभ भटट
स0अ0,एल0टी0

गोबिन्द बल्लभ भटट
स0अ0 एल0टी0
रा0इ0का0झूलाघाट ,पिथौरागढ।

रा0इ0का0 झूलाघाट।

# भारत में राष्ट्रवाद–

## गॉधी –इरविन समझौता–

सविनय अवज्ञा आन्दोलन के दौरान 5 मार्च 1931 को महात्मा गॉधी और भारत के तत्कालीन वाइसराय लार्ड इरविन के बीच समझौते के प्रमुख प्रावधान निम्नलिखित थे।

1– सविनय अवज्ञा आन्दोलन को स्थगित कर दिया जायेगा।
2–सरकार अध्यादेशों और मुकदमों को वापस ले लेगी।
3–हिंसात्मक अपराधियों को छोड़कर समस्त अन्य समस्त राजनीतिक बन्दियों को मुक्त कर दिया जायेगा।
4–समुद्र तट से निश्चित दूरी पर नमक बनाने की छूट होगी।
5–शराब ,अफीम व विदेशी वस्तुओं की दुकानों पर धरना देने वालों को गिरफतार नहीं किया जायेगा।
6–कांगेस द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेगी।
7–जिन व्यक्तियों ने सरकारी नौकरियां छोड़ दी है उन्हें वापस लेने में उदार नीति अपनायी जानी चाहिए।
8–विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का राजनीतिक हथियार के रूप में प्रयोग नहीं किया जायेगा।

गोबिन्द बल्लभ भटट
स0अ0,एल0टी0
रा0इ0का0 झूलाघाट।



गोबिन्द बल्लभ भटट
स0अ0 एल0टी0
रा0इ0का0झूलाघाट ,पिथौरागढ।

# भारत में राष्ट्रवाद–

गॉधी जी की डाण्डी यात्रा– देश को एकजुट करने के लिए महात्मा गॉधी को नमक एक शक्तिशाली प्रतीक दिखायी दिया 31 जनवरी 1930 को उन्होंने वाइसराय इरविन को एक पत्र लिखा जिसमें एक मॉग यह भी थी कि नमक पर कर को खत्म किया जाय लेकिन लार्ड इरविन ने जब ये बात नहीं मानी तो महात्मा गॉधी ने अपने विश्वस्त 78 वालिंटियरों के साथ 12 मार्च 1930 को नमक यात्रा शुरू कर दी जो गुजरात के उनके साबरमती आश्रम से 240 किमी दूर डांडी नामक गुजरात के तटीय कस्बे में खत्म होनी थी ,24 दिन की इस यात्रा में जगह–जगह हजारों की संख्या में लोगों ने इस यात्रा का स्वागत किया अंततः 6 अप्रैल को आत्मशुद्वि के बाद गॉधीजी ने समुद्र के पानी से अपने हाथों से नमक बनाकर ,अगेजों के नमक कानून को भंग कर दिया ।

**डा0 विपिन चन्द्र ने लिखा है –यह कार्यवाही भारतीय जनता द्वारा अंग्रेजों द्वारा बनाये गये कानूनों के तहत रहने और इस प्रकार बिट्रिश शासन के अधीन रहने से इन्कार का प्रतीक थी।**

गोबिन्द बल्लभ भटट
स0अ0 एल0टी0
रा0इ0का0झूलाघाट ,पिथौरागढ।

**26 जनवरी 1930 का महत्व**–1929 के जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में कांगेस के लाहौर अधिवेशन में भारतीय राष्ट्रीय कांगेस ने अपना लक्ष्य पूर्ण स्वाधीनता घोषित किया और और स्वाधीनता की मॉग के साथ ही 26 जनवरी 1930 को स्वाधीनता दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की इसी के तहत 1930 से प्रतिवर्ष स्वतन्त्रता प्राप्ति तक भारतीय राष्ट्रीय कांगेस 26 जनवरी को स्वाधीनता दिवस के रूप में मनाती आयी लेकिन जब 15 अगस्त 1947 को देश स्वतन्त्र हुआ तो स्वाधीनता दिवस 15 अगस्त को मनाया जाने लगा लेकिन 26 जनवरी की तिथि का देशवासियों के लिए विशेष महत्व था इसी लिए जब देश के लिए नये संविधान लागू करने का मौका आया तो इसे 26 जनवरी की तिथि से लागू किया गया और 26 जनवरी 1950 से प्रतिवर्ष इस तिथि को गणत्रन्त्र दिवस के रूप में मनाया जाता है।

सत्याग्रह –महात्मा गॉधी द्वारा अंग्रेजी शासन के विरूद्व सत्याग्रह नामक विचारधारात्मक अस्त्र का प्रयोग किया गया ,सत्याग्रह जन आन्दोलन की एक नवीन पद्वति थी ।सत्याग्रह के विचार में सत्य की शक्ति पर आग्रह और सत्य की खोज पर जोर दिया जाता था इसका अर्थ यह था कि अगर आपका उददेश्य सच्चा है ,यदि आपका संघर्ष अन्याय के विरूद्व है तो उत्पीड़क से मुकाबला करने के लिए आपकों किसी शारीरिक बल की आवश्यकता नहीं है ।प्रतिशोध की भावना या आक्रमकता का सहारा लिए बिना सत्याग्रही केवल अहिंसा द्वारा अपने संघर्ष में सफल हो सकता है ।इसके लिए दमनकारी शत्रु की चेतना को झकझोरना चाहिए।

**प्रथम विश्व युद्व और भारतीय राष्टीय आन्दोलन– प्रथम विश्व युद्व ने भारत के राष्टीय आन्दोलन को बल प्रदान किया ।इस समय भारत में बढ़ते मूल्यों ने जनसामान्य के समक्ष कठिन स्थितियां उत्पन्न कर दी थी । ग्रामीणों को सेना में भर्ती हाने के लिए बाध्य किया गया ,उनसे बेगार करवाई गयी इन कारणें से भारतीय जनता में बिट्रिश शासन के विरूद्व व्यापक असन्तोष उत्पन्न हुआ और भारत में राष्टीय भावनाएं जाग्रत हुई।।**

गोबिन्द बल्लभ भटट
स0अ0 एल0टी0
रा0इ0का0झूलाघाट ,पिथौरागढ।

8

गोबिन्द बल्लभ भटट
स0अ0 एल0टी0
रा0इ0का0झूलाघाट ,पिथौरागढ।